



# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

AUTONOMOUS  
JABALPUR- 482001  
MADHYA PRADESH, INDIA

## CRITERION-7

### INSTITUTIONAL VALUES AND BEST PRACTICES

Key Indicator – 7.1

Institutional Values and Social Responsibilities

Metric No.: 7.1.10

Human Values and Professional Ethics

Document Name

Student Reflection on Values





**ST. ALOYSIUS' COLLEGE**

**(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)**

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

# Students Articles from Annual College Magazine (Reflection)



# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

VIPER IN APRIL

## जल संरक्षण

शिवांश पटेल

बी.ए. द्वितीय वर्ष

भविष्य में जल की कमी की समस्या को सुलझाने के लिये जल संरक्षण ही जल बचाना है। भारत और दुनियाँ के ऐसे देशों में जल की भारी कमी है जिसकी वजह से आम लोगों को पानी पीने और खाना बनाने के साथ ही रोजमर्रा के कार्यों को पूरा करने के लिये जरूरी पानी के लिये लंबी दूरी तय करनी पड़ती है।

जबकि दूसरी ओर, पर्याप्त जल के क्षेत्रों में अपने दैनिक जरूरतों से ज्यादा पानी को लोग बर्बाद कर रहे हैं। हम सभी को जल के महत्व और भविष्य में जल की कमी से संबंधित समस्याओं को समझना चाहिये। हमें अपने जीवन में जल को बर्बाद और प्रदूषित नहीं करना चाहिए तथा लोगों के बीच जल संरक्षण को बढ़ावा देना चाहिये।

धरती पर जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिये जल का संरक्षण और बचाव बहुत जरूरी होता है क्योंकि जल का जीवन संभव नहीं है। पूरे ब्रह्माण्ड में एक अपवाद के रूप में धरती पर जीवन चक्र को जारी रखने में जल मदद करता है क्योंकि धरती इकलौता अकेला ऐसा ग्रह है जहाँ पानी और जीवन मौजूद है। पानी की जरूरत हमें जीवन भर है इसलिये इसको बचाने के लिये केवल हम ही जिम्मेदार हैं।

संयुक्त राष्ट्र के अध्ययन के अनुसार, ऐसा पाया गया है कि राजस्थान में लड़कियाँ स्कूल नहीं जाती हैं क्योंकि उन्हें पानी लाने के लिये लंबी दूरी तय करनी पड़ती है जो उनके पूरे दिन को खराब कर देती है। इसलिये उन्हें किसी भी काम के लिये समय नहीं मिलता है।

भारत के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते, पानी की कमी के सभी समस्याओं के बारे में हमें अपने आपको जागरूक रखना चाहिये। जिससे हम सभी प्रतिज्ञा लें और जल संरक्षण के लिये एक-साथ आगे आएं। ये सही कहा गया है कि सभी लोगों का छोटा प्रयास एक बड़ा परिणाम दे सकता है। जैसे कि बूंद-बूंद करके तालाब, नदी और सागर बन सकता है। जल संरक्षण के लिये हमें अतिरिक्त प्रयास करने की जरूरत नहीं है।

हमें केवल अपने प्रतिदिन की गतिविधियों में कुछ सकारात्मक बदलाव करने की जरूरत है। जैसे- हर सुतलमाल के बाद नल को ठीक से बंद करें फव्वारे या पाईप के बजाय धोने या नहाने के लिये बाल्टी और मग का इस्तेमाल करें। लाखों लोगों का एक छोटा सा प्रयास जल संरक्षण अभियान की ओर एक बड़ा सकारात्मक परिणाम दे सकता है। धरती पर सुरक्षित और पीने के पानी के बहुत कम प्रतिशत के आंकलन के द्वारा, जल संरक्षण या जल बचाओ अभियान हम सभी के लिये बहुत जरूरी हो चुका है।

औद्योगिक कचरे की वजह से रोजाना पानी के बड़े स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। जल को बचाने में अधिक कार्यक्षमता लाने के लिये सभी औद्योगिक बिल्डिंगों, अपार्टमेंट्स, स्कूल अस्पतालों आदि में बिल्डरों के द्वारा उचित जल प्रबंधन व्यवस्था को बढ़ावा देना चाहिये। पीने के पानी या साधारण पानी की कमी के द्वारा होने वाली संभावित समस्याओं के बारे में आम लोगों के जानने के लिये जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाना चाहिये। जल की बर्बादी के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए हमें जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाना चाहिये।

## आओ साथी वृक्ष लगाएँ

अमिता सक्सेना  
बी.एस.सी प्रथम वर्ष

आओ साथी, वृक्ष लगाएँ।  
वृक्षों की धरती हरी बनाएँ।  
वृक्षों से हमारे जीवन दाता।  
वृक्षों से हमारे भाग्य विधाता।  
वृक्षों से उपवन पुनः सजाएँ।  
वृक्षों से साथी वृक्ष लगाएँ।  
वृक्षों ने पशुओं को पाला।  
वृक्षों ने ईंधन दे डाला।  
औषधि का भंडार वृक्ष है।  
ममता का आधार वृक्ष है।  
बीच-बीच में फूल उगाएँ।  
आओ साथी वृक्ष लगाएँ।  
वृक्षों की हरियाली,  
वृक्षों से सब की है खुशहाली।  
हम को खुश करती हरियाली,  
हम सुरमित करती हरियाली  
स-प्राण को वृहद बनाएँ,  
वृक्षों साथी वृक्ष लगाएँ।

Sustainable Living

## आखिर कब तक रोक पाओगे मुझे?

अगर समझोगे पानी तुम, आग सा बन जला दूँगी।  
अगर आंकोगे हिम्मत मेरी, पर्वत तक हिला दूँगी।  
आजमालो मेरे जब्बे को तुम, समुद्र धीर आगे बढ़ना सिखा दूँगी  
कब तक रोक पाओगे मुझे ?

आयुषी वीधरी  
बी.एस.सी., पंच सेमेस्टर

मैं वह पौधा नहीं, जो उपजाऊ जमीन में जन्मी हो।  
मैं वह पौधा नहीं, जिसे सारी खाद नसीब हुई हो।  
मैं तो वह पौधा हूँ, जिसने मृत्यु समान सूखे को, पीकर जीना सीखा है।  
बंजर धरती पर उगना सीखा है।  
तुम गिरा सकते हो मुझे,  
मगर तोड़ नहीं पाओगे।  
हर रात देकर मैंने अपनी, सूरज बनना सीखा है।  
कब तक रोक पाओगे मुझे?



एक मुकाम न मुकम्मल हुआ, तो तुमने कम क्यों आंक लिया  
खुद को बलशाली समझ, तुमने मुझे धिक्कार दिया।  
भूल गये हर तुफान से पहले हवाएँ भी रुख बदलती हैं।  
हर बदलाव से पहले, ये धरती भी ठहरती है।  
यूँ छोटी-छोटी खुशियों से मुझे क्या मिलेगा ?  
मैं तो वह पक्षी हूँ, जो गगन धीर उड़ना जानता है।  
मुझे वह मोती समझो जो समय के साथ उभरता है।  
मुझे वह कमल समझो जो कीचड़ में भी ही खिलाता है।  
एक दिन तुम सबको दिखलाऊँगी मैं  
कब तक रोक पाओगे मुझे?

Leadership and Responsibility





# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## दहेज प्रथा

श्रुति सोनी

बी.कॉम, प्रथम वर्ष

नारी देश की भविष्य होती है आज की नारी हर जगह उन्नति कर रही है। लड़कियाँ परिवार की शान होती हैं। जगहों में आज भी हमारा समाज लड़कियों को सम्मान नहीं देता है। हर लड़की एक बेटी, बहू, पत्नी, माँ का पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ पूर्ण करती है। आज के युग में हर लड़की को आत्मनिर्भर होना चाहिए।

जहाँ आज हमारे देश की बेटियाँ हर क्षेत्र में परिपूर्ण हैं वहीं कुछ लड़कियाँ समाज पीड़ित भी हैं। जी हाँ, हमारे देश में दहेज प्रथा आज भी दृष्टिगत है। जब एक लड़की अपना घर छोड़ कर किसी अपरिचित घर में जाती है तो नहीं पता होता है कि वहाँ के लोग कैसे होंगे। वह अपने सपने छोड़कर किसी और का घर संभालने जाती है। उसके दुख को कोई नहीं समझता। इससे संबंधित एक कहानी है— एक घर में हलचल थी। वह शादी का घर भी अपने कार्यों में व्यस्त थे। बेटी के पिता चिंतित थे।

उन्होंने बड़ी मेहनत से अपनी बेटी के लिए रूपयों का इंतजाम किया था रात हो चुकी थी, बारात आने का समय बारात आई तो दूल्हे का खूब अच्छे से स्वागत हुआ। दुल्हन मंडप में आ गई थीं शादी के बीच में ही दूल्हे का गिर मचाने लगा क्योंकि उन्होंने जितनी माँग की थी उतने दहेज का इंतजाम नहीं हो पाया और शादी टूट गयी। ता इतनी मेहनत से बेटी को पढ़ा-लिखा कर उसकी शादी करके उसे किसी और के हाथ सौंप रहा है और वालों को दहेज चाहिए। मैं सिर्फ इतना ही कहूँगी—“बेटी समाज का भविष्य है और वही सबसे बड़ा धन है।” प्रथा समाप्त हो जानी चाहिए।

Social Commitment

## ऐसे मिलता सुख

राकेश घुई  
बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक महिला के जीवन में सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था घर औसत आय, परिवार, बच्चे आदि। बस उसे लगता था कि सुख नहीं है।

एक बार वह अपने छोटे बच्चे को लेकर एक मंदिर में संत के पास पहुँची थीं वहाँ बहुत भीड़ थी, उसी बीच वह अपनी बारी आने का इंतजार कर रही थी। इस बीच बच्चा खेलते-खेलते कहीं चला गया। कुछ देर बाद जब महिला को पता चला तो उसका जी घबरा गया। उसने रोना-चीखना शुरू कर दिया और वह आँसू भरे आँखों से घरों और अपने बच्चे को खोजने लगी। अंततः एक कोने में जल के पास बच्चा पानी खेलता मिल गया। महिला ने राहत की सांस ली और बच्चे को छाती से लगा लिया। कुछ देर बाद संत से मुलाकात की बारी आई।

संत ने उससे पूछा— क्या चाहती हो? महिला बोली— कुछ नहीं। उसे सुख मिल गया था, जो उसके पास लेने से ही था। गाय अपनी पूँछ की अहमियत तब समझती है, जब वह खो जाती। हम भी अजीबिका, रिश्ते, संतान के लायक पैसे का महत्व तब तक नहीं समझते जब तक कि वे खो नहीं जाते। हमें पहचानने की जरूरत है।



# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## एकता

अंकिता एंड्रूस  
बी.ए. तृतीय वर्ष

“भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।

हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।”

भारत की एकता ही उसकी सुंदरता है। एकता में अनेकता यही है भारत की विशेषता। भारत में हर धर्म, जाति, समुदाय एवं लिंग के लोग एक साथ रहते हैं। यही भारत को और देशों से अलग करता है।

भारत में कई भिन्न जाति, समुदाय के लोग एक साथ मिल कर रहते हैं। परंतु आज भारत की एकता खंडित होती हुई नजर आ रही है। जहाँ वर्षों से हिंदू-मुस्लिम एक साथ रह रहे थे आज वह स्थान उस प्रेम से रिक्त होता दिख रहा है। आज हमारी समस्या है गरीबी, बेरोजगारी, महँगाई आदि परंतु उन समास्याओं के ऊपर है हमारी एकता में फूट की समस्या। पर लोग सम्प्रादायिक दंगे कर रहे हैं। भारत की उस सुंदरता को नष्ट कर रहे हैं। नेताओं का वोट बैंक आज हमारी एकता को बरबाद कर रहे है।

हिन्दू-मुस्लिम के नाम पर बोट मॉर्गे जा रहे हैं। हिन्दुस्तान एक उर्दू शब्द है जो कि हमें बताता है हम सब एक है। हम अपनी एकता को बरबाद करते जा रहे हैं। जिसका फायदा एक बार फिर विदेशी देश उठा सकते हैं। अंग्रेजों ने भी “फूट डालो और राज करो” नीति को अपनाया और 200 वर्षों तक राज्य किया। “ हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई मिलकर रहे क्योंकि ये है भाई-भाई। आज जनता को जागरूक होने की आवश्यकता है इस देश के लोग ऐसे छलावे

### Nationalism, Secularism and Gender Equality

हिन्दू-मुस्लिम के नाम पर बोट मॉर्गे जा रहे हैं। हिन्दुस्तान एक उर्दू शब्द है जो कि हमें बताता है हम सब एक है। हम अपनी एकता को बरबाद करते जा रहे हैं। जिसका फायदा एक बार फिर विदेशी देश उठा सकते हैं। अंग्रेजों ने भी “फूट डालो और राज करो” नीति को अपनाया और 200 वर्षों तक राज्य किया। “ हिन्दू मुस्लिम, सिख, ईसाई मिलकर रहे क्योंकि ये है भाई-भाई। आज जनता को जागरूक होने की आवश्यकता है इस देश के लोग ऐसे छलावे में ना आएँ जो देश की उन्नति में बाधा बने। हम तभी एक शक्तिशाली देश बन सकते हैं जब हम हमारे लोग साथ मिलकर कार्य करें। हम कई बार हिन्दू, मुस्लिम, गुजराती बन जाते हैं, हमें हर पल, हर घड़ी हर समय भारतीय बनने की जरूरत है।

“ हिंदी और उर्दू में एक ही फर्क है हम देखते सपने और देखते है ख्वाब” अर्थात शब्दों संस्कृति आदि का फर्क है एकता एक परंतु रूह, भावनाएँ एक ही हैं। भारतीय होने पर हमें गर्व है, और एक भारतीय सभी जाति, धर्म, लिंग आदि से ऊपर है। “ एकता में अनेकता है भारत की विशेषता” जरूरत इस कथन को सही में साबित करने की।

“द्वन्द्व कहीं तक पाला जाए।

दोनों तरफ लिखा हो भारत। सिक्का वही उछाला जाए।

तू भी है राणा का वंशज। फेंक जहाँ तक माला जाए।

मंदिर में एक दीप जले तो मस्जिद तक उजाला जाए।।”

जय हिंद जय मातम







# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## एक सलाम उस फौजी के नाम

दुष्यंत  
बी.ए. तृतीय वर्ष

एक सलाम मेरा उस फौजी के नाम  
जब हम सोते थे तब वे दिन-रात जागते थे  
जब हम सुबह जगते थे, तो रोज एक जवान को शहीद पाते थे।  
मेरा सलाम उस फौजी के नाम।।

मेरा सलाम उस फौजी के नाम  
जो अपने परिवार से सालों दूर रहा करते हैं,  
जो अपने परिवार की तस्वीर वदी में लिए लड़ा करते हैं।  
मेरा सलाम उस फौजी के नाम।।

जिनके दिन की शुरुआत ही गोलियों से हुआ करती है  
जिनके मुँह पर ज़रा सी भी नायूसी नहीं झलका करती है।  
मेरा सलाम उस फौजी के नाम।।

एक सलाम उस फौजी के नाम  
जो रोज अपने परिवार से यह कहा करता था कि मैं जल्दी आऊँगा  
और परिवार यह दुआ करता है।  
उसे क्या पता था कि तिरंगे में लिपटा आऊँगा  
और अपनी जान दे इस देश की जान बचाऊँगा।

Patriotism

Forgiveness

## सुबह का भूला शाम को लौट आया

नित्या पाठक  
बी.ए. तृतीय वर्ष

सोना एक होनहार लड़की थी। माता पिता की चहेती आज्ञाकारी बेटी। विद्यालय में अध्यापक भी उसे बहुत प्यार करते थे क्योंकि वह काम समय पर पूरा करती थी।

एक दिन सोना की मित्रता अपनी कक्षा की सुविधा से हो गई सुविधा के साथ उसी अच्छा लगने लगा। उसकी चिन्ता धीरे धीरे बढ़ती गई और वह सुविधा के साथ सैर सपाटे पर जाने लगी। धीरे-धीरे उसका ध्यान पढ़ाई से हटने लगा। माता-पिता को समझाने पर अब उसने पलट कर जवाब देना भी शुरू कर दिया। देखते-देखते चार महीने कहीं बीत गए उसे पता ही ना चला। वह इतनी खुश थी कि उसे बहुत अच्छी सहेली मिल गई थी।

उसके साथ रहना घूमना फिरना, मौज मस्ती उसके लिए रोज की बात हो गई थी। समय बीतता गया परीक्षा आ गई।

अब सोना को होश आया उसे तो कई सारे पाठ तैयार ही नहीं किये।

बोर्ड परीक्षा में वह पहली बार में ही फेल हो गई। वह रोने लगी माँ ने उसे समझाया, "सुबह का भूला शाम को लौट आया तो उसे भूला नहीं कहते कोई बात नहीं बेटा अभी भी तुम्हारे पास एक महीना है दिन रात पढ़ाई में जुट जाओ।" उसने को गले लगा लिया उसने ऐसा ही किया वार्षिक परीक्षा में अच्छे अंक आए।





# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## युवाओं में नैतिक मूल्यों का ह्रास

मोहनीष दुबे  
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

भारत एक ऐसा देश है जो अपनी संस्कृति एवं मूल्यों के लिये विश्व विख्यात है। युवा, इस देश की भविष्य है जिस पर देश का भविष्य पूर्णतः निर्भर है परन्तु स्थिति में देश के युवाओं में नैतिक मूल्यों का पतन का विषय है खास तौर पर 15-20 वर्ष की आयु समूह में अपशब्दों का प्रयोग, अभद्रता, बुजुर्गों के साथ अनजानक व्यवहार कई गुना बढ़ चुका है। हमें सोचना है कि इसका कारण आखिर क्या है? आखिर क्यों हमारे युवा वर्ग अपनी संस्कृति भूलता जा रहा है?

वर्तमान युवा की पीढ़ी वास्तविकता से ज्यादा महत्व को देती है। अपने आप को अब्बल एवं शक्तिशाली बनने का प्रयास करती है। नियम-कानून तोड़ने को रूतबा समझती है और तो और अपशब्दों का प्रयोग

वास्तविक है। जरूरत है वास्तविकता में जीने की, दिमागी गुलामी से आजादी पाने की।

उपाय :-

- दिखावे से ज्यादा वास्तविकता को महत्व दें।
- बड़े बुजुर्गों एवं बच्चों के साथ अधिक समय व्यतीत करने का प्रयास करें।
- सोशल-मीडिया का उपयोग सिर्फ आवश्यकता अनुसार ही करें।
- कुछ समय प्रकृति के साथ व्यतीत करें।
- प्रतिदिन माता-पिता के कामों में सहयोग करें।

### Moral & Ethical Values

वर्तमान युवा की पीढ़ी वास्तविकता से ज्यादा महत्व को देती है। अपने आप को अब्बल एवं शक्तिशाली बनने का प्रयास करती है। नियम-कानून तोड़ने को रूतबा समझती है और तो और अपशब्दों का प्रयोग अपने मित्रों के बीच गौरवान्वित महसूस करती है। बिड़ी, खाना, सिगरेट आदि के सेवन को अपनी मर्दानगी का प्रमाण समझती है। अपना आधे से ज्यादा समय सोशल मीडिया पर अपने आप को लोकप्रिय बनाने के प्रयासों में व्यर्थ कर देती है। इन सब बातों की वजह से हमारे देश का युवा मानसिक रूप से परभ्रमण भटक चुका है। दिखावे और काल्पनिक दुनिया का गुलामी गुलाम बन चुका है। आखिर कब तक हमारे देश के युवा ऐसे ही अपने एवं अपने देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। जरूरत है उन्हें सही मार्गदर्शन की, उन्हें यह ज्ञान कि दिखावे से ज्यादा वास्तविकता में जीने की

अनुसार हा कर।

- कुछ समय प्रकृति के साथ व्यतीत करें।
- प्रतिदिन माता-पिता के कामों में सहयोग करें।
- चैटिंग एवं कॉलिंग से ज्यादा वास्तविक वार्तालाप को महत्व दें।
- खाली समय में समाचार-पत्र एवं पुस्तकों के अध्ययन के माध्यम से अपने आप को व्यस्त रखें।
- इस देश ने हमें बहुत मान-सम्मान दिया है और अब इसका सम्मान बचाये रखने कि जिम्मेदारी हमारी है।

जय हिंद जय भारत!





# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## Believe in your Hardwork

True story of Late Honorable President Dr. APJ Abdul Kalam ji"

While addressing students of a city Mr. Kalam shared one of his experience of turning rejection into opportunity.

He was 23 when he joined the Air Force applying for the post of a pilot where only 9 were selected he was 10<sup>th</sup> in the rank so he lost it. He never stopped working hard and finally hardships paid him and he became President of India and the circle of chance brought him a chance to get himself trained for the air force and at the age of 63 he took his first flight. It proved that hard times are always there it is who have to focus on the goal and work for it tirelessly with right amount of hardwork and commitment - hardwork is key to any achievement"

A man saw a snake being burned to death decided to take it out of the fire. When he the snake bit him causing excruciating pain. The man dropped the snake, and the reptile fell back into the fire.

Ritu Pillai  
M.Com I Year

away The dragon in my chest rejects me, she's so tired of being slain. There are nights when the loneliness cowers, says she can't fight it another day..."

"What about the phoenix?"  
"she slits with me in the darkness. She whispers we'll rise just you wait."

There was once a farmer who grew the most excellent wheat. Every year, he won the award for best wheat in his country.

A wise woman came to him ask him about his success.

He told her that the key was sharing his best seed with his neighbours so they could plant the seed as well.

The wise woman asked, "How can you share your best wheat seed with your neighbours when they compete with you every year?"

"That's simple," the farmer replied. "The wind spreads the pollen from everyone's wheat and carries it from field to field."

"If my neighbours grew inferior wheat, I must help my neighbours grow the best wheat as well."

This is not only excellent advice for growing the

## Ethics and Professionalism

## MONEY : A Refreshing and a Simple Way to Think !

Kriti Dubey  
BBA III Year

You believe that money will make you happy. I know this because I have spent a lifetime making excuses for not seeking or asking for more of it. I held back on earning more money because I thought it would make me happier. Wait, what? This begins to make more sense when we see that the opposite is also true: 'Losing money will make me unhappy.' If we think losing money makes us unhappy, we don't want to risk losing it by exposing ourselves to making more of it. Make sense?

I feared to make more money because this would introduce a higher risk of losing and spending more of it. I would potentially create more instances of people saying no to my requests. Asking for more money would increase the pain I'd experience from more lost sales or denied jobs. And when money is at risk, we think our self-worth; our happiness; our fulfilment too - is at risk. This is rooted in the belief that having more money will make us happier.

When people say 'money won't make you happy,' what does this even mean?

When I hear this, I hear: 'money is inextricably linked to your well-being.'

Money determines well-being.'  
Is that true? Many people believe this to be a

to make money so you can focus on doing the things you actually want to do."

Do this now. Really see how you are happy deep inside yourself. See how having more or less money has no effect on this more profound happiness. When we can see the tremendous good money for which it can be used, we have a reason to create more value, ask for more of it, and make lots more of it.

We are open to making more because hearing no is just information, not a rejection of ourselves. It's never personal. It's about specific circumstances that are always changing. We can start seeing that money, when viewed healthily, is a means to make a change and contribute, support our families, create space to relax, slow down and create.

And it starts with understanding what money really is. You are already happy by default, beneath your thoughts. See money, not as a source of happiness, but as a means to make a difference. Making a difference. Money can be used to make a difference, but it can also be seen as a reflection of a difference having been made. It is a token of thanks you receive from making a difference.

For example, if I coach someone to reach his or her dream of...



# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## Pursuit of Happiness

Ruskin Bond  
B.Sc. III year

### Be grateful or it will be too late

You were their by my side when no one was there. Framing this topic was to make you all aware of the fact that we are so ungrateful.

Seeing old parents there in old homes is something agonizing to watch the ones who loved us unconditionally who supported us when everything seemed against us who sacrificed themselves for us. But we people don't notice the efforts and sacrifices our parents make for us. They toil hard for us just because they want to see us happy and when its our turn to be their to support we turn our heads away from them.

We should find ourselves lucky to have them in our lives for as God himself have given the highest status to them ignoring them in their old age - leaving there hands when they need us the most is extremely sad What all they need is your love.

As it is righteously said that the way to heaven is through them.

They don't need our money, they don't need anything but they need our love, our presence, so be grateful or it will be to late. Rather than regretting whole life for not being there for them or being their support is completely our choice.

For example, if I coach someone to reach his or her dream of writing a novel, and I help them to overcome blocks and resistance, I am paid for making a difference. When I make money, I know I am doing something to make a positive difference in the lives of other people. And that makes me want to go out and make more of it.

**Stay  
Positive,  
Work hard,  
Make it  
Happen.**

Self-Esteem

## Selfcare Is Not Being Selfish

Taking care of yourself,  
By unplugging from  
This world like shelf,  
Does not mean self-care is unfair.

Giving the best hours,  
Of your day to yourself  
does not mean -  
Self-care is self-absorbed.

Living a healthy life,  
Through different styles  
Does not mean-  
Self-care is self-centred.

Priortising yourself before  
someone,  
Becomes a part of discussion,  
Which is none other than-  
A term called self-obsession.

Stepping back into our true sleeves,  
Is openly called self- belief,  
Which can be mentally achieved  
But, for society it's not good indeed.





# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## Stand up for Yourself

S. Sashikala  
BA III year

Two months back, when I was waiting for my flight at the Mumbai airport, I had an acquaintance with a very powerful motivational speaker. She was neatly dressed up and sat there scribbling something in a small diary. Since she was sitting alone, I went up to her and greeted her with a bright smile. She acknowledged me with a cheerful face and asked me to sit on the vacant seat beside her. I delightedly sat beside her.

After some formal introductions, five words slipped off my mouth, 'your life is so peaceful.' Hearing me, she took off her glasses and looked me straight in my eyes, and asked, 'what made you think so?' I answered frantically, 'You are always surrounded by positive vibes, you light up people's lives, giving them motivation and inspiring them to leave behind the negativity around them. You haven't taken any wrong turns and now you have reached the top.' With a pause, I continued, 'Your life is so perfect and a great example to many.' She smiled and said, 'I have not always been the way I am today.' I knew a retentive flashback was coming up. So I adjusted myself in a good position and looked at her in awe.

reached its peak. Each day was a nightmare. Each night I cursed myself for not speaking up for myself and pursue what I desired. Finally, I completed my 12th with 75%. I was completely satisfied with my performance, as I had scored more than I imagined, and had got fruit for the pain I had gone through.

Talking about my future, dad wanted me to specialize in mathematics, which was totally against me. This time mom was silent, which was a clear sign, I had to speak up for myself. The quote 'now or never' danced before my eyes and finally I vocalized my aspiration to pursue my future in the field of English. I faced resentment from dad and was insecure. But then I saw my mothers' eyes shine with pride, which gave me back my confidence and I stood firm in my decision. Finally, dad agreed and that night I slept with a great sense of achievement. My career took off in English and I found happiness and loved what I did. With persistent hard work, confidence, and determination I reached where I am standing today. Silence is not always the best answer. Sometimes you need to take a stand and speak up for yourself even if your

Self-Awareness

## Beautiful Mind is Better than Fair Complexion

Pankhudi Shrivastava  
M.A. II Year

"Beauty is not the key to success, Beautiful mind is the key to success. If you love yourself, then you will be successful".

What is beauty? Is it your fair complexion or your hair or may be the trendy clothes you wear? In India, we people have a misconception about what real beauty is?

Everyone chases after beauty not noticing that beauty lies within everyone's heart. In matrimonial advertisements, we frequently see a constant demand for a fair bride. We have millions of products in the market which help us get a little more fairer or should we say - "a little more beautiful".

But all this does not define what real beauty is - The real beauty is all about on a person's inside. Inner beauty consists of the people's love for themselves, their love for others,

Beauty requires having self-respect and displaying self respect shows that you love your body, your mind, your spirit and your soul. Beautiful people carry themselves in a respectable manner. Beautiful people show generosity to others, even to those who mistreat them and also help others who are less fortunate than them. It means beauty is beyond skin but it's in the soul. Social psychology explains beauty as only skin deep, that is beautiful people actually are nicer and friendlier from within.

Real beauty is on the inside which is more important than one's outward appearance. One might look good externally but is known better internally

The features of personality which is based on one's



# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## Travelling Broadens your Horizons

Traveling experiences not only make us aware and familiar of new place or area but it also create some everlasting impact on person's life as it involves experiences that comes from direct interactions with on going travellers and locals. Traveling along with family and friends enhances personal growth which is priceless. Once you travel it opens your eyes to new cultures and ways of life. It's easy to go through life only interacting with people who live close to you, but travelling can help you learn so much more about the world and its people.

Travelling helps the person to be independent and adapt himself as per dynamic environment and its people it can help open the eyes to true kindness and goodness of humanity as while ongoing travelling not only we pass by numerous passengers but somehow we can also get interacted and that clears the myth that "when you travel you are on your own, but that simply is not the case".

Travelling alone helps to build emotional intelligence as it is the time when a person

Vipasha Shivdasani  
BA III Year

expand his mind and discover his purpose. This is the phase in which a person tends to be more creative. Travelling broadens your mind because this experience would not be pre planned as a person would be unfamiliar and this is the time when with unfamiliar circumstances people tend to learn more.



Professionalism

## Hard Work Beats Luck

Guru Tahandip  
B.A. III Year

Within the domain of victory, numerous people property their accomplishments to good fortune. They accept that a stroke of great fortune is all it takes to reach the apex of their desires. Whereas luckiness can certainly play a part in one's travel. It is difficult work that eventually clears the way to victory. Difficult work is the establishment upon which exceptional achievements are built. It is the immovable devotion, persistent exertion, and countless hours contributed within the interest of an objective. Good fortune, on the other hand, is flighty and unusual. Depending exclusively on luck is associated with putting your dreams within the hands of chance, with no control over the result. Consider the stories of eminent people who have accomplished significance. From business people to competitors, craftsmen to researchers, they all share one common characteristic: an immovable commitment to difficult work. Thomas Edison, the innovator of the light bulb, broadly expressed, "Virtuoso is one percent

entryways, pulls in openings, and extends skylines. It makes a force that moves people forward, bringing them closer to their objectives. It is worth recognizing that fortune can once in a while play a part in one's travel. Fortunate experiences and unforeseen turns of occasions can give a boost. Be that as may, it is important to recognize that these occasions are frequently the result of difficult work creating favourable circumstances. putting within the exertion, people, the probability of being with the proper time. In conclusion, sometimes grin upon us, it reliably wins. Difficult work constrain behind victory, e outperform their limitation and accomplish their objective. control of difficult work require control of their preparation above the confinements of way to victory that's persevering.

motivation and ninety-nine percent sweat. Difficult articulation typifies the quintessence of difficult work, emphasizing the imperative part it plays in changing thoughts into reality. Difficult work breeds mastery and authority. It empowers people to secure in-depth information, refine their abilities, and persistently make strides. Luck cannot reproduce the benefits of encounter picked up through difficult work. Victory isn't handed on a silver platter but earned through persistent exertion, diligence, and an eagerness to memorize from disappointments. In addition, difficult work perseverance teach and strength. It builds character, grit, and the capacity to overcome deterrents. Good fortune may offer a transitory advantage, but it is difficult work that supports victory over the long pull. Those who depend exclusively on good fortune regularly discover themselves ill-equipped to handle challenges when they emerge, whereas those who have contributed time and exertion are way better prepared to adjust and flourish in unfavourable circumstances. Moreover, difficult work makes openings. As the saying goes, "Luck favours the arranged." When people contribute their time and vitality into their interests, they position themselves for victory. Difficult work opens

The content shared here combines my thoughts with AI assistance, ensuring it is free from plagiarism.



Discipline and Hard work





# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## राजनीति का अपराधीकरण

अरुण कपूर

बी.ए. प्रथम वर्ष

वर्तमान में सर्वाधिक सुख भोग राजनीतिक सत्ता प्राप्ति को परिभाषित करता है। जहाँ राजनीति का मुख्य मूल्य शक्ति कर्मनिष्ठा थी वहीं शनैः शनैः सत्ता प्राप्ति के संघर्ष में अपराधों की घुसपैठ एक धिता जनक विषय बन चुका। राजनीति मुख्यतः देश की आर्थिक गतिविधियों का समुच्चय है। इसकी नैतिक व मूल्यपूरक मर्यादाएँ हैं। जबकि सामाजिक व्यवस्थाओं व नागरिक हितों पर आघात के समर्थक हैं।

अपराध समस्त नागरिकों पर गंभीर घाव छोड़ते हैं। इसके बावजूद राजनीति सर्वाधिक आकर्षक होती जा रही। शक्ति के गंभीर रूप से अपराधीकरण में सामाजिक प्रभावों को जानते हुए भी स्थिति यह है कि राजनीति की सत्ता अपराधों के प्रथम कदम के रूप में अनिवार्यता का रूप ले रही है।

राजनीतिक मर्यादाओं व मूल्यों के संदर्भ में स्वतंत्रता प्राप्ति से आज तक आमूल चूल परिवर्तन दिखाई देते हैं। शक्ति समर्पण, सच्ची कर्मनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा सामाजिक सेवा भाव राजनीति के प्रमुख आधार मूल्य माने गए हैं। धर्म-नीच, जात-पाँत, धर्म-भाषा, भेदभाव से इतर ही राजनीतिक मूल्य को स्थापित किया गया है।

वर्तमान सुधारों जैसे चेलैया समिति, द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग, विधि आयोग द्वारा रिपोर्टों के आधार पर राजनीतिक अपराधीकरण को रेखांकित किया गया है। कई बार ऐसे प्रयास किए गए दोषियों व दागियों का एक प्रवेश रोका जाए फिर भी वर्तमान में लगभग एक तिहाई जनप्रतिनिधि कई मामलों में दोषी या दागी हैं।

दिन-प्रतिदिन ऐसे प्रतिनिधियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। हत्या, बलात्कार भ्रष्टाचार हिंसा आदि मामलों में प्रतिनिधियों को सजा प्राप्त हुई है फिर भी राजनीति में इनका वर्चस्व है।

सुप्रीम कोर्ट दागी राजनीतिज्ञों के संदर्भ में फैसले दे चुकी है। परंतु विधायिका फैसले को पलटने की कोशिश कर रही है। यह हमारे सपनों का भारत नहीं हो सकता जिसकी कल्पना भगत सिंह जैसे लोग समाजवाद में कर चुके हैं।

यदि समस्या के कारणों पर गौर करें तो स्पष्ट है कि महत्वाकांक्षी जनप्रतिनिधि बादशाह सलामत बनने के लिए आतुर हैं। सत्ता की रईसी, धन लाभ अहम् कारण हैं। जनता को यह दिखाना कि शक्तिशाली क्या हैं और कौन-कौन अपराधों को समर्थन देता है।

धनबल, बाहुबल जनप्रतिनिधियों के लिए अपराध की पृष्ठ भूमि तैयार करते हैं, आपराधिक पृष्ठभूमि के लोगों को लालच से राजनीति को दूषित किया वहीं दूसरी ओर आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को नेताओं ने अपराध ल हेतु संरक्षण तथा राजनीति को कलंकित किया।

Social Commitment



# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## व्यक्तित्व का विकास

रवीन्द्र अहिरवार  
बी.ए. द्वितीय वर्ष



आज का दौर कैसा चल रहा है। इस दौर में जनता भी एक दौर की तरह ही दौड़ती हुई चली जा रही है। आगे पीछे क्या हुआ यह सब भूलकर हम सिर्फ बढ़ते जा रहे हैं। इस प्रतियोगिता वाले समय में हम एक दूसरे से भिन्न अपनी मंजिल को प्राप्त करने में लगे हुये हैं। इस मंजिल को पाने में कुछ लोगों को सफलता मिलती है कुछ को असफलता। यही क्रम लगातार चलता रहता है। जिसको सफलता मिलती है वह अधिक प्रसन्न होता है और अपनी सफलता की खुशी को वह अपने परिवार, दोस्त समाज के साथ बांटता है। मगर संसार की भौतिक चीजे पाकर भी मनुष्य अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाता और अपने को एक सफल व्यक्ति बनाने में असफल हो जाता है। क्योंकि वह अपने तक ही सीमित रहता है। जैसे कि हम मान कर चले की आज हम पढ़ाई कर रहे हैं क्यों ? प्रश्न हमारे दिमाग में हमेशा आना चाहिए कि हम जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए जो कदम आगे बढ़ाते हैं क्यों ? क्योंकि हम नहीं जानते कि हम क्यों कर रहे हैं ? जो विद्यार्थी यह जान लेता है कि मैं यह क्यों कर रहा हूँ वहीं से व्यक्तित्व का विकास शुरू

## Life Skills

## “क्या है जिंदगी?”

प्रतीक्षा केसरवानी  
बी.कॉम. प्रथम वर्ष



कभी हमने सोचा है इस बारे में कि “ क्या है जिन्दगी”? कहने को तो ये तीन शब्द हैं पर न इन तीन शब्दों को कोई समझ पाया है और न ही जी पाया है। हम क्या जानते है जिंदगी के बारे में बस यही कि जो हम जी रहे है वही है जिंदगी। पर ऐसा नहीं है। जिन्दगी तो दर्शन है, कला है, विज्ञान है या अज्ञान है। भूत है, भविष्य है, वर्तमान है यही सर्व विद्यमान है। जिन्दगी वो है जिसमें हर रोज एक नया पन्ना जुड़ता है जिसमें कई अच्छे बुरे पल आते है जो एक किताब बन जाते हैं।

कैसी ने एकबार पूछा, “ जीवन क्या है?” उत्तर प्राप्त हुआ :-

जब मनुष्य जन्म लेता है तो उसके पास सांसे तो होती है पर कोई नाम नहीं होता और जब मनुष्य की मृत्यु होती है तो उसके पास नाम तो होता है पर सांसे नहीं होती। इन्हीं सांसों और नाम के बीच की यात्रा को “जिन्दगी” कहते है। इसलिए कहा जा है..





# ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

## असफलता ही सफलता की राह है



पूजा कंबट  
बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर

एक बार की बात है दो दोस्त थे राम और मोहन। राम अपने जीवन के कठिन समय से गुजर रहा था। उसे जीवन में बार-बार असफलता मिल रही थी। लेकिन मोहन एक सफल व्यक्ति था। मोहन की खास बात यह थी की वह जो भी काम करता था, उसमें सफल जरूर होता था।

एक दिन राम, मोहन से मिलने आया और उससे उसकी सफलता का राज पूछा। यह सुनकर मोहन मुस्कराने लगा, और बोला की असफल व्यक्तियों की असफलताओं से ही मैंने सफल होना सीखा है। यह सुनकर राम सोच में पड़ गया और बोला कि यह कैसे संभव है। किसी असफल व्यक्ति की असफलताओं से सीखकर तुम सफल कैसे बन सकते

## भय

(अनात्म-विश्वास)

अक्षय सोनी

बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

बहरहाल जो लोग अपने विश्वास के दम पर सफलता की बुलंदियों को छू रहे हैं उनके लिए सारे समाज की दृष्टि सही होती है और विश्वास से भरी होती है। परन्तु वह जो उन सफल लोगों की तरह अपने आत्म विश्वास जग-जाहिर नहीं कर पाते और वह भी योग्य हो तो आप यह समझ सकते हैं। कि वह उन सफल लोगों से अधिक बुद्धिमान हैं। तभी वह ज्यादा सोच विचार के कारण अपने मन में एक ऐसा भय उत्पन्न कर लेते हैं जो उन्हें अपना विश्वास जग जाहिर नहीं करने देता। यही वह बुद्धिमानी का एक ऐसा स्तर उन्हें योग्य होने के बावजूद असफल बना देता है। इसलिए हम भय के बारे में चर्चा कर रहे हैं। "क्यों भय है कि एक ऐसी चीज जो योग्य और बुद्धिमानी से शिक्षित व्यक्ति को असफल बना सकती है।"

उदाहरणार्थ किसी कक्षा में बैठे दो विद्यार्थी जो दोनों ही पढ़ने में अब्बल हैं। परन्तु उनमें से एक बुद्धिमान है और एक बुद्धि हीन। जब उनके शिक्षक उनसे सवाल जवाब करते हैं, तो दूसरा छात्र उन्हें सीधे-सीधे जवाब देकर बैठ जाता है। परन्तु बुद्धिमान छात्र यही सोचता रह जाता है कि जब मैं जवाब दूंगा तो कहीं मेरा जवाब गलत न हो जाए अथवा मेरे मुँह से कुछ ऐसी बात नहीं निकल जाए जिससे लोग मुझ पर हँसे।

या फिर जब कोई डरावना नाटक देखता है, तो जब तक उसके मन में डर न हो तब तक सब ठीक है। परन्तु यदि एक बार डर ने घर कर लिया तो कितना भी "पीटना पीट ले" आप चाह कर भी उसे अपने मन से नहीं निकाल सकते हैं।